S.S. Jain Subodh P.G. College, Jaipur
(Autonomous)

SYLLABUS

THREE YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME IN

ARTS

As Per NEP- 2020 (New Scheme - 2025-2026)

Department of Sanskrit

एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

स्वायत्तशासी

विषय- संस्कृत परीक्षा योजना

- अधिकतम अंक - 150
- समयावधि - 3 घंटे
- आन्तरिक मूल्यांकन - 45 अंक
- कुल क्रेडिट - 6 (1क्रेडिट - 25 अंक)
- न्यूनतम उत्तीर्णांक - 60 अंक

<u>सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए|</u>

1. 10 में से 07 प्रश्नों के उत्तर (अतिलघुत्तरात्मक)	7 x3 = 21 अंक
2. 04व्याख्या या प्रश्न विकल्पसहित	4 x5 = 20 अंक
3. 04 प्रश्न विस्तृतात्मक विकल्पसहित	4x 16= 64 अंक

नोट :–

1.अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न विषय परिचयात्मक (उत्तर-सीमा 15-20शब्द) प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है ।

2. व्याख्या या लघुत्तरात्मक प्रश्न विकल्पसहित (उत्तर –सीमा 100-150 शब्द) प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है ।

3.विस्तृतात्मक ,टिप्पणीपरक प्रश्न विकल्पसहित(उत्तर- सीमा 350-400 शब्द) प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का है ।

एस.एस. जैन सुबोध पी. जी. महाविद्यालय , जयपुर
संस्कृत विभाग
परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम – 2025-2026

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्रपूर्णांक	आंतरिकमूल्यांकन	कुलयोग	समयावधि
दृश्य,श्रव्य एवं नीतिकाव्य	105 अंक	45 अंक	150 अंक	3 घंटे

द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्रपूर्णांक	आंतरिकमूल्यांकन	कुलयोग	समयावधि
भारतीय संस्कृति के मूल तत्व,व्याकरणएवं अनुवाद	105 अंक	45 अंक	150 अंक	3 घंटे

तृतीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्रपूर्णांक	आंतरिकमूल्यांकन	कुलयोग	समयावधि
वैदिक साहित्य,गद्य साहित्य एवं व्याकरण	105 अंक	45 अंक	150 अंक	3 घंटे

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्रपूर्णांक	आंतरिकमूल्यांकन	कुलयोग	समयावधि
नाटक,छंद,अलंकारएवं संस्कृत साहित्य का इतिहास	105 अंक	45 अंक	150 अंक	3 घंटे

पंचम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्रपूर्णांक	आंतरिकमूल्यांकन	कुलयोग	समयावधि
भारतीय दर्शन एवं व्याकरण	105 अंक	45 अंक	150 अंक	3 घंटे

षष्ट सेमेस्टर

प्रश्नपत्र	प्रश्नपत्रपूर्णांक	आंतरिकमूल्यांकन	कुलयोग	समयावधि
काव्य एवं धर्मशास्त्र	105 अंक	45 अंक	150 अंक	3 घंटे

एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

बी. ए.(संस्कृत) प्रथम सेमेस्टर पाठ्यक्रम

दृश्य, श्रव्य एवं नीति काव्य

<u>पेपर कोड</u> - **<u>क्रेडिट</u>** – 06 (1क्रेडिट = 25 अंक) **पूर्णाङ्क –** 150 अंक

<u>समयावधि</u> – 3 घंटे **<u>मूल्यांकन</u>** - 105 अंक **<u>आन्तरिक मूल्यांकन-</u>** 45अंक

<u>शिक्षण विधि</u> - व्याख्यान विधि, लेखन विधि, अभ्यास विधि उच्चारण विधि

<u>उद्देश्य</u> - इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को दृश्य, श्रव्य काव्य (नाटक), एवं नीति काव्य के माध्यम से संवाद विधि का ज्ञान करवाना व नीति कथाओं के माध्यम से व्यवहारिक ज्ञान करवाना क्रियात्मक रूप से नाटक संवाद एवं मंचन अभ्यास श्याम पट्ट की सहायता से लेखनाभ्यास ।

<u>परिणाम</u> –इस पाठ्यक्रम से छात्रों को दृश्य, श्रव्य एवं नीति काव्य का ज्ञान होता है इससे वे विभिन्न शैली के काव्यों को समझ सकेंगे और तत्कालीन साहित्यिक, ऐतिहासिक और कलात्मक विधाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे। नाटक संवाद कला से संस्कृत वार्तालाप का ज्ञान होगा। साहित्य में प्रयुक्त रस,अंलकार, छंद आदि का ज्ञान क्रियात्मक रूप से संस्कृत नाटक का अभ्यास कर सकेंगे ।

<u>पाठ्यक्रम</u>-

इकाई-प्रथम स्वप्रवासवदत्तम् (महाकवि भास कृत)।

श्लोकों का प्रसंग , अनुवाद एवं व्याख्या, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न कवि एवं काव्य परिचय

इकाई -द्वितीय नीतिशतकम् (भर्तृहरि)

श्लोकों का प्रसंग, अनुवाद एवं व्याख्या, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न कवि एवं काव्य परिचय ।

इकाई तृतीय -रघुवंश महाकाव्यम् (प्रथम सर्ग)महाकवि कालिदास

श्लोकों का प्रसंग , अनुवाद एवं व्याख्या, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न कवि एवं काव्य परिचय

इकाई- चतुर्थ -संज्ञा प्रकरण(वर्ण ,संज्ञासूत्र,सुप् ,तिङ् प्रत्यय)परिचय एवं सूत्रार्थ ।लघुसिद्धांतकौमुदी के अनुसार

<u>सहायक ग्रंथ/संदर्भ ग्रंथ</u>

स्वप्रवासवदत्तम् -महाकवि भास विरचित ।

नीतिशतकम् - कवि भर्तृहरि ।

रघुवंशमहाकाव्यम् (प्रथम सर्ग) –महाकवि कालिदास विरचित ।

अनुवाद चन्द्रिका ,रचनानुवादकौमुदी (कपिलदेव द्विवेदी) लघुसिद्धान्तकौमुदी–भीमसेन त्यागी ।

एस. एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

बी. ए.(संस्कृत) द्वितीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम

भारतीय संस्कृति के मूल तत्व,व्याकरण एवं अनुवाद

पेपर कोड - **क्रेडिट** – 06 (1क्रेडिट = 25 अंक) **पूर्णाङ्क –** 150 अंक

समयावधि – 3 घंटे **मूल्यांकन** - 105 अंक **आन्तरिक मूल्यांकन-** 45अंक

शिक्षण विधि - क्रमानुसार पाठन, लेखन विधि, व्याकरण अभ्यास, सूत्रों का अर्थ ज्ञान, मूल्यांकन विधि ।

उद्देश्य- संस्कृत भाषा की प्राचीनता व्याकरणात्मक शैली है। भाषा को जानने के लिए व्याकरण ज्ञान अत्यावश्यक है।इस पाठ्यक्रम से छात्रों को भाषा का प्रारंभिक ज्ञान, वर्णाक्षर ज्ञान,शब्द, क्रिया रूप ज्ञान होता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य लघु सिद्धांत कौमुदी के अनुसार व्याकरण के मूल स्वरूप को जानना है।

परिणाम –

इस पाठ्यक्रम से भारतीय संस्कृति तथा पाणिनीय व्याकरण ज्ञान की बारीकियों को छात्र समझ सकेंगे। इस व्याकरणात्मक पाठ्यक्रम से वर्ण,शब्द, संधि ,समास , प्रत्यय आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकगें ।

पाठ्यक्रम- इकाई प्रथम - भारतीय संस्कृति के मूल तत्व -- विषय,पृष्ठभूमि एवं विशेषताएं भारतीय संस्कृति के विकास की रुपरेखा (पूर्व वैदिक काल से आधुनिक काल तक),वर्ण,आश्रम,संस्कार,शिक्षा,एवं लेखनकला , भारतीय संस्कृति का मानव कल्याण में योगदान ।

इकाई - द्वितीय हितोपदेश –मित्रलाभ (नारायण पंडितकृत)

कथा परिचय ,सार , प्रसंग, अनुवाद एवं व्याख्या विषय वस्तु संबंधित प्रश्न, कवि एवं काव्य परिचय ।

इकाई तृतीय व्याकरण -- संधि प्रकरण(अच्,हल्,एवं विसर्ग संधि)लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार।
सूत्र की सोदाहरण व्याख्या ,शब्दसिद्धि

इकाई चतुर्थ अनुवाद -कर्ता क्रिया संबंध, कारक एवं विभक्त ज्ञान, संस्कृत से हिन्दी- हिन्दी से संस्कृत अनुवाद ।

सहायक ग्रंथ/संदर्भ सूची –

भारतीय संस्कृति के मूल तत्व ।

हितोपदेश (मित्रलाभ) - नारायण पण्डित ।

हिंदू संस्कार- राजबली उपाध्याय ।

लघु सिद्धांत कौमुदी - भीम सेन त्यागी ।

लघु सिद्धांत कौमुदी - अर्क नाथ चौधरी ।

रचना अनुवाद कौमुदी - कपिल देव द्विवेदी,अनुवाद चंद्रिका

एस. एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर
बी. ए.(संस्कृत) तृतीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम
वैदिक साहित्य, गँद्य साहित्य, एवं व्याकरण

पेपर कोड - क्रेडिट – 06 (1क्रेडिट = 25 अंक) **पूर्णाङ्क –** 150 अंक

समयावधि – 3 घंटे **मूल्यांकन** - 105 अंक **आन्तरिक मूल्यांकन-** 45अंक

शिक्षण विधि - क्रमानुसार पाठन, लेखन विधि, व्याकरण अभ्यास, सूत्रों का अर्थ ज्ञान, मूल्यांकन विधि

उद्देश्य- इस पाठ्यक्रम से छात्रों को वैदिक साहित्य में प्रयुक्त देवताओं के स्तुति मंत्रों के साथ संबंधित देवता का परिचय देना हैं। गद्य साहित्य में पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम नीति एवं व्यवहारिक ज्ञान करवाना हैं। व्याकरण में शब्द के विभक्ति रुप से भाषा का प्रयोग करना ।

पाठ्यक्रम –इकाई प्रथम- ऋग्वेद के प्रमुख सुक्त(1) अग्निसूक्त 1/1, (2)वरुण सूक्त 1/25,(3) इन्द्र सूक्त 2/12,(4) क्षेत्रपति सूक्त4/57 ,(5)विश्वेदेवा सूक्त 8/58,(6) प्रजापति सूक्त10/121,(7) संज्ञान सूक्त 10/191।सूक्तों के मंत्रों का सप्रसंगअनुवाद, सूक्तसंबंधि देवता का परिचय ।

इकाई द्वितीय- कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय प्रथम वल्ली)

अनुवाद एवं व्याख्या, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न

इकाई तृतीय- पंचतंत्र (अपरिक्षित कारक) पं. विष्णु शर्मा प्रणीत ।

कथा परिचय ,सार , प्रसंग, अनुवाद एवं व्याख्या विषय वस्तु संबंधित प्रश्न, कवि एवं काव्य परिचय ।

इकाई चतुर्थ – व्याकरण (अजन्त प्रकरण) सूत्र एवं शब्दसिद्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी अनुसार)

राम,हरि,सर्व,लता,मति,ज्ञान,फल ,तत्,अस्मद्,युस्मद्,चतुर ।

सहायक ग्रंथ/ संदर्भ सूची-

वैदिक सूक्त संग्रह, वैदिक सूक्त मूक्तावलि, ऋक् सूक्त संग्रह ।

पंचतंत्र (अपरिक्षित कारक) पं. विष्णु शर्मा ।

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अजन्त प्रकरण)

परिणाम –

इस पाठ्यक्रम से छात्रों को वैदिक साहित्य में प्रयुक्त देवताओं का परिचय मिलता है पंचतंत्र की कथाओं के माध्यम से व्यवहारिक ज्ञान कल्पनाशिलता,विचारशिलता का तथा वस्तुस्थिति का ज्ञान करवाना है कथाओं से संवाद शैली का ज्ञान तथा शब्द रूप से विभक्ति , कारक परिचय मिलता है

एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

(स्वायत्तशासी)

बी. ए.(संस्कृत) चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम

नाटक, छंद,अलंकार एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास

पेपर कोड - **क्रेडिट** – 06 (1क्रेडिट = 25 अंक) **पूर्णाङ्क –** 150 अंक

समयावधि – 3 घंटे **मूल्यांकन -** 105 अंक **आन्तरिक मूल्यांकन-** 45अंक

शिक्षण विधि -व्याख्यान विधि, आगमन विधि, अभ्यास विधि, उच्चारण , लेखन, प्रश्नोत्तर, व्याकरणात्मक ज्ञान ।

उद्देश्य - इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाटक की रुपरेखा, काव्य सौंदर्य, भाषा शैली , संवाद आदि प्रमुख आयामों का परिचय करवाना है छंद ज्ञान के माध्यम से पद्य उच्चारण का ज्ञान प्राप्त करना है । संस्कृत साहित्य के इतिहास में प्राचीन काल की वस्तु स्थिति , सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यिक ज्ञान करवाना है ।

पाठ्यक्रम - इकाई प्रथम –अभिज्ञानशाकुन्तलम् (महाकवि कालिदास कृत नाटक)

काव्य एवं कवि परिचय सप्रसंग व्याख्या अंक परिचय,अंक सार , प्रश्नोत्तर ,पात्र चरित्र चित्रण ।

इकाई द्वितीय- छंद,अलंकार (लक्षण एवं उदाहरण*)*

छंद-अनुष्टुप , आर्या, उपजाति,भुजंगप्रयात, वसन्ततिलका, शिखरिणी,मालिनी,इन्द्रवज्रा,उपेन्द्रवज्रा,मन्दाक्रान्ता ।अलंकार- अनुप्रास,यमक,श्लेष,वक्रोक्ति, उपमा,रुपक,उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति,अप्रस्तुत, प्रशंसा ।

इकाई तृतीय- संस्कृत साहित्य का इतिहास

रामायण और महाभारत , प्रमुख नाटक, नीति काव्य,परिचयात्मक विषय वस्तु सम्वन्धित प्रश्न । **आधुनिक संस्कृत साहित्य (राजस्थान प्रान्त के संदर्भ में)।**

कवि एवं काव्य परिचय अम्बिकादत्त व्यास, पं. मधुसूदन ओझा, मथुरानाथ शास्त्री, नवलकिशोर कांकर, पं मोहन लाल पाण्डेय, डॉ. कलानाथ शास्त्री,

सहायक ग्रंथ/संदर्भ सूची -

अभिज्ञानशाकुन्तलम् कवि कालिदास विरचित

छंद श्चयनिका , छंद परिचय ,संस्कृत साहित्य का इतिहास बलदेव उपाध्याय

परिणाम –इस पाठ्यक्रम से संस्कृत नाट्यशास्त्र की प्राचीनता, कलात्मकता, नाटक के कला सौष्ठव, समृद्धि का ज्ञान करवाना । नाटक के माध्यम से कल्पना शीलता, विचार शीलता, संवाद शैली का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा । संस्कृत साहित्य के समृद्ध इतिहास को जानने में सहायक सिद्ध होता

एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

(स्वायत्तशासी)

बी. ए.(संस्कृत) पंचम सेमेस्टर पाठ्यक्रम

भारतीय दर्शन एवं व्याकरण

पेपर कोड - **क्रेडिट** – 06 (1क्रेडिट = 25 अंक) **पूर्णाङ्क –** 150 अंक

समयावधि – 3 घंटे **मूल्यांकन** - 105 अंक **आन्तरिक मूल्यांकन-** 45अंक

शिक्षण विधि -व्याख्यानविधि, लेखन अभ्यास, परिचर्चा क्रमानुसार अध्ययन, उच्चारण अभ्यास, मूल्यांकन विधि

उद्देश्य - इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय दर्शन एवं तत्वज्ञान से विद्यार्थियों को अवगत करवाना, श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों के बारे में प्रयुक्त दार्शनिक जानकारी देना है व्याकरण ज्ञान के माध्यम से व्यवहारिक संस्कृत भाषा का ज्ञान करवाना है

पाठ्यक्रम

इकाई प्रथम –श्रीमद्भगवत्गीता (द्वितीय ,तृतीय अध्याय)

श्लोक का सप्रसंग अनुवाद एवं व्याख्या, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न ।

इकाई द्वितीय -तर्क संग्रह (अन्नम भट्ट कृत)

विषय परिचय एवं शब्दार्थ, सप्रसंग अनुवाद एवं व्याख्या विषय वस्तु संबंधित प्रश्न

इकाई तृतीय - व्याकरण तिङन्त प्रकरण सूत्र एवं रुप सिद्धि(लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार)

प्रमुख धातु -पठ्, भू, गम् पच् ,एध्,अस्

प्रमुख लकार- लट्,लुट्,लृट्,लोट्,लङ् लिङ् (वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत्काल, आज्ञार्थ , विधिलिङ्ग लकार)

इकाई चतुर्थ- निबन्ध रचना (संस्कृत भाषा)

सदाचारः, आश्रम-व्यवस्था, वर्णधर्मः, सत्संगति, संस्कारः, परोपकारः, संस्कृतभाषा ,विद्यायाः महत्त्वम्, पर्यावरणम्

सहायक ग्रंथ/संदर्भ सूची –

श्रीमद्भगवत्गीता गीताप्रेस

तर्कसंग्रह (अन्नम भट्ट कृत) ,लघुसिद्धान्त कौमुदी भैमी व्याख्या, निबन्ध-सौरभम् ,संस्कृत निबन्ध संग्रह

पाठ्यक्रम परिणाम- इस पाठ्यक्रम से छात्रों को प्रमुख दार्शनिक जानकारी , निष्काम कर्म, भक्ति योग, ज्ञान योग तथा गीता में भगवान कृष्ण के उपदेश का ज्ञान प्राप्त होगा । तर्क संग्रह से तत्वज्ञान दर्शन की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर

(स्वायत्तशासी)

बी. ए.(संस्कृत) षष्ठ सेमेस्टर पाठ्यक्रम

काव्य एवं धर्मशास्त्र

पेपर कोड - **क्रेडिट** – 06 (1क्रेडिट = 25 अंक) **पूर्णाङ्क –** 150 अंक

समयावधि – 3 घंटे **मूल्यांकन** - 105 अंक **आन्तरिक मूल्यांकन-** 45अंक

शिक्षण विधि - व्याख्यान विधि, लेखन अभ्यास, परिचर्चा क्रमानुसार अध्ययन, उच्चारण अभ्यास, मूल्यांकन विधि, कार्यभार योजना

उद्देश्य –इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियो को प्राचीन संस्कृत भाषा के काव्यो, धर्मशास्त्र ग्रन्थो का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान कराना है, ताकि जीवन मे उपयोगी प्रमुख नियमो, संस्कारो का ज्ञान प्राप्त कर सके ।

पाठ्यक्रम

इकाई प्रथम— वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड प्रथम सर्ग(मूलरामायण)
कथा वस्तु, प्रसंग, श्लोकार्थ, काव्य एवं कवि परिचय, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न
इकाई द्वितीय— शुकनासोपदेश
कथा वस्तु, प्रसंग, गद्यांश व्याख्या, काव्य एवं कवि परिचय, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न
इकाई तृतीय मनुस्मृति द्वितीय अध्याय
कथा वस्तु, प्रसंग, श्लोकार्थ, काव्य परिचय, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न
इकाई चतुर्थ—विदुर नीति (महाभारत उद्योग पर्व अध्याय 34-35)
कथा वस्तु, प्रसंग, श्लोकार्थ, विषय वस्तु संबंधित प्रश्न

सहायक ग्रंथ/संदर्भ सूची –

वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड प्रथम सर्ग(मूल रामायण)
शुकनासोपदेश (कादम्बरी- बाणभट्ट)
मनुस्मृति द्वितीय अध्याय
धर्मशास्त्र का इतिहास

परिणाम यह पाठ्यक्रम संस्कृत काव्यो , धर्मशास्त्रग्रन्थो की विभिन्न शैलियो का ज्ञान करवाता है जिससे धर्म, नीति, इतिहास तथा संस्कृत भाषा के लेखन को समझने व सृजन करने की क्षमता का विकास होता है ।